اپریل ۲۰۱۲ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰہُ تبارَکَ وَتَعالیٰ قَدْ جاءَ کُمْ مِنَ اللّٰہِ نُورٌ وَکِتابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



موسسۂ نور ہدایت، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ۔۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2011-13 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

APRIL 2012





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

बिस्मेही तआला

वर्ष 8 — अंक 10

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

अप्रैल 2012

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

पर्यवेक्षकः

मु० र० आबिद, गोलागंज लखनऊ

संरक्षक

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै. **कल्बे जवाद** नक़्वी साहब

सम्पादक

सै. **मुस्तफ़ा हुसैन** नक़्वी 'असीफ़' जायसी

उप-सम्पादक

क़ायम महदी नक़्वी 'तज़हीब' नगरौरी

सै० आसिफ़ अब्बास नौगांवी, हुसैन हैदर अकबरपुरी

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 — 0522-4062731 Mobile No: 09335276180 — 09335996808

सै. कल्बे जवाद नक़्वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़्वी 'असीफ़ जाएसी'।

Per copy 20/- Annual 200/-



R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com



E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

विषय सूची

अप्रैल 2012ई०
जमादिउल अव्वल 1433हि०

अमर सेनानी

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
अनुवादकः सैय्यद मुहिब्बुल हसन रिज़वी 'समर' हल्लौरी

मनुष्य को जीवन में पग-पथ पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। एक ओर उसे अपने मनुष्यत्त्व की महानता को जीवित रखने के हेतु अपनी इच्छाओं, पाशुविक अन्तःक्षेभों तथा शारीरिक आवश्यकताओं से बुद्धि के नेतृत्व में तथा कर्तव्य पालन के अन्तर्गत युद्ध करना पड़ता है दूसरी ओर सत्यता के मार्ग में जो कठिनाइयाँ उत्तपन्न होती हैं उनके विरोध की आवश्यकता पड़ती है। वातावरण, समय की चाल अत्याचार तथा हिंसा की शक्तियाँ उसको प्रायः उसके मार्ग से हटा देने में बाढ़ के बहाव, आँधियों के जटिल झक्कड़ों और तूफ़ान के हर थपेड़े पर स्थिर रहने, जान पर खेल जाने, सिद्धांतों से बाल भर न हटने की शक्ति हर मानव प्राणी में नहीं होती। दृढ़ प्रतिज्ञा, सहन शक्ति आदि शब्द तो आचार, नीति शास्त्र तथा दर्शन शास्त्र में तो बहुत मिल जायेंगे परन्तु कठिन हालतों तथा कठिन रास्तों में मनुष्य के पग आगे बढ़ाने, साहस को जटिल रखने तथा डगमगाते हुए पैरों में स्थिरता की शक्ति उत्पन्न करने के लिए एक प्रयोगात्मक आदर्श की आवश्यकता है। एक ऐसे पथ प्रदर्शक की आवश्यकता है जो ऐसी कठिन परिस्थितियों, ऐसी सख़्त परीक्षा तथा आपत्तियों की राहों को रौंदते हुए सफ़लता पूर्वक मानवता की चोटी पर खड़ा होकर समस्त संसार को आवाज़ दे रहा हो, ''आओ और मेरे पैरों की छाप पर चल कर सत्यता, यथार्थता, ऐश्वर्य तथा सहनशीलता के गौरव को प्राप्त करो।'' यह करबला में शहीद होने वाले हुसैन इब्ने अली के जीवन चरित्र की झलकियाँ हैं जो इस पुस्तक में उपस्थित की जा रही हैं।

नाम तथा वंश

हज़रत अबू अब्दिल्लाहिल हुसैन जो रसूल के कुल में के तीसरे इमाम हैं। आप पैग़म्बरे खुदा हज़रत मुहम्मद के नवासे तथा मोमिनों के सरदार हज़रत अली के छोटे पुत्र थे। आपकी माता हज़रत रसूल की वह आदरणीय पुत्री थीं जिनके सम्मान हेतु रसूल स्वयं खड़े हो जाते थे जिनको सभी मुसलमान अभ्रांत स्त्री तथा नेत्री के नाम ये याद करते हैं। और मुसलमान घरों में जिनको हज़रत बीबी जैसे पवित्र नाम से स्मरण किया जाता है। हज़रत का नाम फ़ातिमा ज़हरा था और रसूल ने आपको स्त्रियों की विश्वनेत्री की पदवी दी थी। ऐसे माता पिता के पुत्र और ऐसे नाना के नाती हुसैन थे जिन्हें अध्यात्मिक योग्यतायें माता-पिता तथा नाना से परम्परा रूप में मिली थीं।

जन्म

हिजरत के चौथे वर्ष तीसरी माह शाबान बृहस्पतिवार के दिन इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का शुभ जन्म हुआ। इस शुभ समाचार को सुनकर हज़रत रसूले खुदा[स०] आए, बच्चे को गोद में लिया, प्यार किया, दाहिने कान में अज़ान बाएं कान में अक़ामत कही और अपनी ज़बान मुँह में दे दी। पैग़म्बर की पवित्र जीभ का रस हुसैन का भोजन बना। सातवें दिन अक़ीक़ा (मूंडन) किया गया। आपके जन्म होने से पूरे ख़ानदान में प्रसन्नता का अतीत अनुभव किया गया। परन्तु भविष्यज्ञानी पैग़म्बर के नेत्रों से पानी बरस रहा था। और इसी से रसूल की गृह सम्बन्धियों में हुसैन की भविष्य विपदाओं का वर्णन होने लगा था।

पालन-पोषण

पैग़म्बर की गोद में जहाँ इस्लाम परवान चढ़ रहा था वहीं अब दो बच्चों का पोषण आरम्भ हुआ एक हसन

दूसरे हुसैन और इन सब को परवान चढ़ाने वाली केवल रसूल की गोदी थी एक ओर रसूले इस्लाम जिनके जीवन का लक्ष्य यह था कि मानव नीति की पूर्ति करें दूसरी ओर अली जो अपने कर्तव्य द्वारा अल्लाह की इच्छाओं के ग्राहक बन चुके थे तीसरी ओर हज़रत बीबी फ़ातिमा जो रसूल के रसूलत्व को स्त्री वर्ग तक रच्नात्मक ढंगसे पहुँचाने के लिए ही पैदा हुई थीं, इस प्रकाशमय वातावरण में हुसैन का पालन-पोषण हुआ।

रसूल का प्रेम

हज़रत रसूले ख़ुदा अपने दोनों नातियों से बहुत प्रेम करते थे। सीने पर बिठाते थे। कांधों पर चढ़ाते थे और मुसलमानों को ताकीद करते थे कि इनको प्रेम से रक्खो परन्तु छोटे नवासे के साथ आपका प्रेम कुछ विशेषता के साथ था। ऐसा हुआ कि नमाज़ की दशा में हुसैन आकर पीठ पर बैठ गए हैं और रसूल ने अपने सजदे को लम्बा कर दिया और सजदे से सर न उठाया। कभी भाषण देने में हुसैन मस्जिद के दरवाज़े पर आ गए हैं और गिर गए हैं तो रसूल ने अपने भाषण को रोककर हुसैन को उठाने के लिए मिम्बर (कुर्सी) पर से उतर कर अपने प्रेम का प्रमाण दिया और मुसलमानों को सूचित किया कि ''देखो यह हुसैन है। इसे ख़ूब पहचान लो और इसकी महानता को याद रक्खो'' रसूल ने हुसैन के लिए यह शब्द भी कहे कि ''हुसैन मुझ से है और मैं हुसैन से हूँ'' भविष्य ने यह बता दिया कि रसूल के इस कहने का अर्थ यह था कि उनका नाम तथा उद्देश्य दोनों हुसैन की व्यक्तित्व द्वारा संसार में सदैव रहेंगे।

रसूल की मृत्यु के पश्चात्

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की अभी केवल 6 वर्ष की आयु थी जब अधिक प्रेम करने वाले नाना का देहान्त हो गया। अब पच्चीस वर्ष तक हज़रत अली का एकान्तमय जीवन है। इस काल में विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों से इमाम हुसैन को गुज़रना पड़ा और इन्होंने बहुत सी घटनाएं देखीं और अपने पिता के चरित्र को भी देखते रहे। यही वह काल था जब आपने युवावस्था में प्रवेश किया और पूरी जवानी बिताई जब हुसैन की आयु 31 वर्ष की थी तो साधारण मुसलमानों ने हज़रत अली को ख़लीफ़ा मान लिया। यह हज़रत के जीवन के अन्तिम पाँच वर्ष थे जिनमें सिफ़्फ़ीन और नहरवान के युद्ध हुए और इमाम हुसैन ने इनमें अपने आदरणीय तथा सम्मानपूर्ण पिता की सहायता के हेतु भाग लिया और अपनी वीरता को सिद्ध भी किया। सन् 40 हिजरी में हज़रत अली मस्जिदे कूफ़ा में शहीद हुए और अब इमामत और ख़िलाफ़त के अधिकार इमाम हसन की ओर गए जो इमाम हुसैन के बड़े भाई थे। हुसैन ने एक वफ़ादार तथा कर्तव्य को जानने वाले भाई के समान इमाम हसन का साथ दिया। और जब इमाम हसन ने उन शर्तों के साथ जिनसे इस्लाम का लक्ष्य सुरक्षित रह सके, मुआविया से संधि कर ली तो इमाम हुसैन भी इस सन्धि पर राज़ी हो गए। और शांतिमय जीवन व्यतीत करने लगे। दस वर्ष तक इमाम हसन अलैहिस्सलाम के जीवन में तथा दस वर्ष उनकी मृत्यु के पश्चात आपने शांत तथा एकांत का जीवन व्यतीत किया और पूजा तथा इस्लाम धर्म के प्रचार को अपना धेय बना लिया परन्तु मुआविया ने उन शर्तों को जो इमाम हसन के साथ की थीं बिल्कुल पूरा न किया। स्वयं इमाम हसन अलैहिस्सलाम को शाम के शासक की राय से विष दिया गया। हज़रत अली आत्मज अबी तालिब के शीओं को चुन-चुन कर क़ैद किया गया। सिर काटे गए और सूली पर चढ़ाया गया। और अन्त में इस शर्त के बिल्कुल विपरीत कि शाम का शासक अपने मरने के बाद के लिए किसी दूसरे शासक को नामज़द न करेगा, मुआविया ने यज़ीद को (जो उसका पुत्र था) अपने बाद राज्य का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। और सब मुसलमानों से शक्ति द्वारा उसकी अधीनता स्वीकार करने के लिए प्रयत्न किये गए। और शक्ति तथा धन के बल पर इस्लामी संसार के बड़े भाग को उसका आधीन बना ही लिया गया।

गुण तथा आचार

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम तीसरे इमाम थे, पवित्र तथा अभ्रान्त की मूर्ति थे। आपकी पूजा, पवित्रता, दान आदि गुणों को शत्रु, मित्र सभी मानते थे। रात-दिन में एक हज़ार रकात नमाज़ पढ़ते थे। और प्रायः रोज़ा

रखते थे। आपने पच्चीस हज पैदल किए। आपकी दान परिवृति तथा वीरता बाल्य काल से इतनी स्पष्ट थीं कि स्वयं रसूलुल्लाह ने कहा "हुसैन में मेरी दान परिवृति तथा वीरता दोनों सम्मिलित हैं अतेव आप के द्वार पर यात्री तथा आवश्यकता रखने वाले लोग सदा आते रहते थे। और कोई प्रश्न करने (मांगने) वाला लौटाया नहीं जाता था इस कारण आपकी पदवी "अबुल मसाकीन" अर्थात् दीनों का पिता था। रातों को रोटी तथा खजूर के बोरे पीठ पर लाद कर ले जाते थे और दीन दुखियों तथा विध्वाओं को पहुँचाते थे जिनके निशान पीठ पर पड़ गए थे। आप सदा कहते थे "जब किसी आवश्यकता रखने वाले व्यक्ति ने तुम्हारे आगे हाथ फैला दिया तो इसका अर्थ यह हुआ कि उसने अपने सम्मान को विक्रय कर दिया। उसको ख़ाली हाथ न लौटाओ कम से कम अपने ही आत्मिक सम्मान का ध्यान करो"।

गुलामों तथा कनीज़ों के साथ अपने रिश्तेदारों जैसा व्यवहार करते थे। ज़रा सी बात पर उन्हें स्वतंत्र कर देते थे। आपकी विद्या की महानता के समक्ष पूरे संसार का सिर झुका हुआ था। धार्मिक समस्याओं तथा महत्वपूर्ण बातों में लोग आपकी ओर आर्कषित होते थे। आपकी प्रार्थनाओं का एक संग्रह, लिखित रूप से सहीफ़-ए-हुसैनिया नामक पुस्तक में आज भी मौजूद है। आप इतने करुणाई थे कि शत्रुओं पर भी उनकी विपदा में उन पर दया करते थे और इतने दयालु थे कि अपनी आवश्यकताओं को छोड़ दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करते थे। इन सब गुणों के साथ-साथ आप बहुत सादी तबीयत के थे यहाँ तक कि कुछ भिखारियों ने जो अपनी भीख (माँगी हुई भोजन वस्तु) खा रहे थे उन्होंने एक बार आप से खाने को कहा। आप तुरन्त ज़मीन पर बैठ गए किन्तु खाया नहीं। इस लिए नहीं खाया कि रसूल के घर वालों को भिक्षा का माल खाना न चाहिए। परन्तु उन भिखारियों के साथ बैठने में आपको कोई इनकार न था।

इस नम्रता की अपेक्षा आपकी महानता का यह प्रभाव था कि जिस जन-समूह में आप होते वहाँ लोग आँख उठाकर बात न करते थे। जो लोग आपके वंश के विद्रोही थे वह भी आपकी महानता को मानते थे। अतेव हज़रत इमाम हुसैन ने शाम के शासक मुआविया को एक कड़ा पत्र लिखा। मुआविया इस पत्र से क्रोधित हुआ और उसके साथियों ने कहा कि आप भी ऐसा ही कड़ा पत्र लिखिये। मुआविया ने कहा यदि जो कुछ मैं लिखूँ वह अगर ग़लत हो तो उससे कोई लाभ नहीं और यदि सही और ठीक लिखना चाहूँ तो अल्लाह की सौगंध मुझे हुसैन में ढूंढने से कोई त्रुटि नहीं मिलती।

आपकी आचार शक्ति, सत्यता, यर्थाता, वीरता, कर्तव्य पालन, कार्य करने की शक्ति, सहनशीलता, दया के उदाहरण आपके उस जीवन में सुरक्षित हैं जो आप ने करबला के मैदान में दस दिन गुज़ारे। इन सब बातों के साथ-साथ आपकी शान में परिवृति के प्रदर्शन का यह हाल था कि अंतिम समय तक शत्रु से सन्धि करने का प्रयत्न करते रहे। किन्तु आपकी दृढ़ प्रतिज्ञा वह थी कि जान देदी परन्तु उस सत्य मार्ग से जिसको पहले दिन चुना था उससे एक इंच भी पीछे न हटे। उन्होंने एक पुत्र समान पिता की आज्ञा का पालन किया। छोटे भाई के रूप में बड़े भाई की आज्ञानुसार कार्य किया और करबला में एक नेता एवं सरदार के समान पूरे मित्रगण के नेत्रत्व का कार्य पूरा किया। इस प्रकार यह कार्य किये कि आज्ञापालन के समय महत्तम आज्ञाकारी सिद्ध हुए और सरदारी के समय महत्तम नेता भी सिद्ध हुए।

करबला की दुर्घटना

हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम से और शाम के शासक मुआविया आत्मज अबुसुफ़यान से जो सन्धि हुई थी उसकी एक मुख्य तथा महत्वपूर्ण शर्त यह थी कि मुआविया को अपने मरने के पश्चात् किसी उत्तराधिकारी की नियुक्ति का अधिकार न होगा। परन्तु सब शर्तों को उसने ठुकराते हुए इस शर्त का भी उल्लंघन किया और अपने पुत्र यज़ीद को अपने बाद के लिए नामज़द किया बल्कि अपने जीवन में ही अपने पुत्र यज़ीद को ख़लीफ़ा घोषित करके उसकी आधीनता को समस्त इस्लामी देशों के निवासियों से स्वीकार कराने के लिए हर देश में भ्रमण किया और लोगों से आधीनता की स्वीकृति प्राप्त कर ली। उस समय हज़रत इमाम हुसैन ने आधीनता से बिल्कुल

इनकार कर दिया। शाम के शासक ने आपके मत को प्राप्त करने का हर प्रकार प्रयत्न किया परन्तु असफलता प्राप्त हुई। केवल यज़ीद का ख़लीफ़ा होना सिद्धान्त के आधार पर ठीक न था बल्कि वह चरित्रहीन तथा आधार के लिहाज़ से गिरा हुआ एवं तुक्ष व्यक्ति था कि ऐसे व्यक्ति का इस्लामी सिंहासन पर बैठना इस्लाम के नियमों के लिए अति हानिकारक था। वह शराबी, बदकार और ऐसे नैतिक अप्राधों का कर्ता था जिनका वर्णन भी सम्यता तथा सज्जनता के विरुद्ध है। इस पर उसकी हट थी कि वह इमाम हुसैन को आधीन बनाए। इसका खुला हुआ अर्थ यह था कि वह अपने बुरे कार्यों को ठीक सिद्ध करने के लिए पैग़म्बरे इस्लाम[स०] के नाती से प्रमाणित कराना चाहता था।

मुआविया के मरने के पश्चात् जब यज़ीद राज्य सिंहासन पर बैठा तो सर्वप्रथम उसको यही चिन्ता हुई कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को बुलाकर उनसे आधीनता की स्वीकृति प्राप्त की जाए। उसने अपने राज्यपाल को जो मदीने में था, मुआविया की मृत्यु का समाचार लिखते हुए हुसैन[अ०] से आधीनता स्वीकृति की इच्छा को प्रकट करते एक पत्र लिखा। वलीद ने जो उस समय मदीने का राज्यपाल था इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को बुलाकर यज़ीद का संदेश दिया। हुसैन इस बात का निर्णय पहले ही से कर चुके थे आपके लिए यज़ीद की आधीनता का स्वीकार करना कदापि सम्भव नहीं है। और आधीनता को स्वीकार न करने की परिस्थिति में जो परिणाम होने वाला था उसे भी आप भलिभांति जानते थे किन्तु अल्लाह के धर्म की रक्षा एवं इस्लामी नियमों तथा सिद्धांतों के हेतु आप सब कुछ सहन करने को तैयार थे। आपने वलीद को उचित उत्तर देकर अपने सम्मान पूर्ण गृह (काबा, मक्का) को प्रस्थान किया। इस घटना के पश्चात मदीने में ठहरना अनुचित जानते हुए किसी दूसरे स्थान पर चले जाने का दृढ़ प्रण कर लिया।

अतः आपने सन् 60 हिजरी रजब के महीने की तिथि 28 को नाना का देश छोड़कर अत्याचारियों तथा हत्यारों के अपराध एवं अत्याचार से विवश होकर विदेश यात्रा पर जाने का निर्णय कर लिया। (महान) मक्का नगर अन्तर्राष्ट्रीय विधान तथा इस्लामी शिक्षा अन्तर्गत शरण स्थान माना जाता था। आप ने मक्के में एक शरणार्थी के रूप में शरण लिया। आपके साथ आपके निकट सम्बन्धी थे जिनमें रसूल के कुल की आदरणीय महिलाएं तथा छोटे-छोटे बच्चे भी थे। आप अपनी ओर से किसी प्रकार के रक्त प्रवाह (ख़ूँरेज़ी) एवं युद्ध का प्रयत्न नहीं कर रहे थे। हज क्रिया का समय भी क़रीब आ रहा था और हज़रत इमाम हुसैन की हार्दिक इच्छा भी थी कि इस वर्ष काबा गृह का हज अवश्य करें यदि मक्के में रहने पायें परन्तु ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो गई कि वह महान व्यक्ति जिसने पच्चीस हज पैदल किए थे, इस समय मक्के में होते हुए भी हज क्रिया की पूर्ति से वंचित रह गया। शाम के अत्याचारी राज्य की ओर से लोग हाजियों की वेशभूषा में भेजे गए थे और उनको यह आदेश दिया गया था कि वह जिस परिस्थिति में भी हों अवसर मिलने पर इमाम हुसैन की हत्या कर डालें।

हज़रत इमाम हुसैन यह न चाहते थे कि आपके कारण मक्के में रक्तप्रवाह हो और काबा गृह का सम्मान भ्रष्ट हो। दो रोज़ हज में शेष रह गए जब आप अपने सब सम्बन्धियों रिश्तेदारों के साथ मक्का से चल दिए। अब आप कहाँ जाते। कूफ़ा निवासी निरन्तर पत्र भेजा करते थे कि आप यहाँ आएं और हमारा धर्म पथ प्रदर्शन करें कि आप मक्के से निकलने पर मजबूर हो चुके थे, तो अब केवल कूफ़ा ही वह स्थान था जिसकी ओर आप जा सकते थे। यहाँ की परिस्थिति को देखने के लिए आप अपने चचाज़ाद भाई हज़रत मुस्लिम आत्मज अक़ील को भेज चुके थे। आप ज़िलहिज्जा को मक्के से कूफ़े जाने के इरादे से चल दिए, परन्तु यही वह समय था जब कूफ़े में क्रांति हो चुकी थी। शुरु में तो कूफ़े के लोगों ने हज़रत मुस्लिम का स्वागत किया और 18,000 आदमियों ने अधीनता स्वीकार की, परन्तु जब यज़ीद को इस बात का पता चला तो उसने कूफ़े के हाकिम नोमान आत्मज बशीर को उसके स्थान से हटा कर ज़ियाद के पुत्र (इब्ने ज़ियाद) को कूफ़े का हाकिम नियुक्त किया।

यह व्यक्ति बहुत ही अपराधी एवं अत्याचारी और हिंसक था। उसने कूफ़े में आकर बड़े-बड़े आदेश

दिये। सभी कूफ़ा निवासी भयभीत हो गए और उन्होंने मुस्लिम का साथ छोड़ दिया और अन्त में अकेले हज़ारों आदमियों का मुक़ाबला करने के पश्चात बड़ी निर्दयता तथा अत्यचार के साथ 9 ज़िलहिज्जा को आप शहीद कर डाले गए। हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम इराक़ के रास्ते में ज़बाला के स्थान पर थे जब हज़रत मुस्लिम की मृत्यु का समाचार उनको मिला इसका हज़रत पर बड़ा प्रभाव पड़ा किन्तु प्रतिज्ञा तथा प्रण में ज़रा भी अन्तर न आया। प्रस्थान करने का भी कोई अवसर न था। यात्रा जारी रही यहाँ तक कि ज़ूहस्म के स्थान पर इब्ने ज़ियाद की सेना में एक हज़ार का समूह हुर के नेतृत्व में हज़रत इमाम हुसैन का रास्ता रोकने के लिए पहुँच गया। यह शत्रुदल था, किन्तु हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने इनके साथ दया तथा करूणा का वह प्रदर्शन किया जो मानव जगत में यादगार रहेगा। समस्त सेना को प्यासा देखकर जितना पानी था सब पिला दिया और उन रास्तों में जहाँ पानी मिलना कठिन था अपने घर वालों तथा छोटे-छोटे बच्चों की प्यास के ध्यान से पानी किसी मात्रा में सुरक्षित न रखा। इसके बाद भी यज़ीद की सेना ने अपने हाकिम की आज्ञानुसार आपके साथ हिंसात्मक व्यवहार किया। आपको आगे बढ़ने या प्रस्थान करने से रोक दिया। अब सन् 61 हिजरी का पहला महीना शुरु हो गया था। दूसरी मोहर्रम को हज़रत इमाम हुसैन करबला की भूमि पर पहुँचे और यहीं उतरने पर मजबूर हो गए। दूसरे दिन से यज़ीद की टिड्डी दल सेना करबला के युद्धस्थल में आना आरम्भ हो गई और तमाम रास्ते बन्द कर दिए गए। इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के साथ केवल बहत्तर जान निछावर करने वाले थे और उधर हज़ारों की सेना थी।

सात दिन तक शांति स्थापित रखने के लिए सन्धि का प्रयत्न होता रहा। हज़रत यहाँ तक तैयार हुए कि अरब का देश छोड़ दें किसी दूसरे दूर स्थान पर चले जाएं और इस प्रकार अपने को यज़ीद के अधीन स्वीकार न करते हुए भी ऐसी सूरत पैदा कर दें कि युद्ध की आवश्यकता न उपस्थित हो। परन्तु नवीं मुहर्रम को तीसरे पहर सन्धि की सम्भावना समाप्त हो गई। इब्ने ज़ियाद के इस पत्र से जो शिम्र के हाथ उमरे साद के पास भेजा गया उसमें लिखा था "या हुसैन को विवश कर दो कि वह बिना किसी शर्त के अधीनता स्वीकार करें या उनसे युद्ध किया जाय" इस पत्र के पहुँचते ही यज़ीदी सेना ने आक्रमण कर दिया।

इसकी अपेक्षा कि सातवीं मुहर्रम से पानी बन्द हो चुका था, इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के समक्ष उनके घर वाले और छोटे बच्चों की व्याकुलता के दृश्य, प्यास की आवाज़ें और भविष्य की सब परिस्थितियाँ थीं, परन्तु यज़ीद की आधीनता का स्वीकार करना अब भी उसी प्रकार असम्भव था जिस प्रकार कि उसके पूर्व था। निस्सन्देह आपने यह इच्छा की कि एक रात का अवकाश मिल जाए। आप यह चाहते थे कि यह रात पूरी की पूरी अन्तिम बार अल्लाह की पूजा में गुज़ारें इसके अतिरिक्त शत्रु व मित्र दोनों को युद्ध करने के लिए अपने-अपने कार्यक्रम पर सोचने का अवसर प्राप्त हो जाए। आपने अपने साथियों को इकट्ठा करके भाषण भी दिया आपने कहा, "कल बलिदान दिवस है। इन अत्याचारियों को मुझ से शत्रुता है। क्या आवश्यकता है कि तुम भी मेरे साथ अपने जीवन को भी ख़तरे में डालो। मैं तुम पर से अपनी अधीनता का भार हटाए लेता हूँ। इस रात के पर्दे में जिधर चाहो चले जाओ" परन्तु इन वीर प्राण देने वालों ने एक साथ मिलकर कहा "हम आपका साथ कदापि नहीं छोड़ेंगे"।

आशूर (दशमी) की रात समाप्त हुई, दसवीं मुहर्रम को प्रातःकाल से लेकर थोड़े दिन तक इन वीर साथियों ने जो कुछ कहा कर दिखाया और उन्होंने इस वफ़ादारी, दृढ़ प्रतिज्ञा तथा वीरता पूर्वक हज़रत इमाम हुसैन की सहायता में शत्रु से युद्ध किया जो इतिहास के पन्नों में सदा स्वर्ण शब्दों में लिखा जाएगा। इन बहादुर हुसैनी साथियों में हबीब इब्ने मज़ाहिर, मुस्लिम इब्ने औसजा, सुवैद इब्ने उमर, अनस इब्ने हारिस और अब्दुर्रहमान इब्ने अब्दे रब ऐसे साठ, सत्तर और अस्सी वर्ष के बुड्ढे और बहुत से रसूल के साथी भी थे, बुरैर हमदानी, कनाना इब्ने अतीक़ तग़लबी, नाफ़े इब्ने हिलाल, हनज़ला इब्ने असअद ऐसे कुरान को ज़बानी याद रखने

वाले बहुत से पूजा करने वाले, रात भर प्रार्थना करने वाले और बहुत से अनुपम वीर थे जिनकी वीरता के कर्तव्य लोगों को स्मर्ण थे।

जब सहायकों में कोई बाक़ी न रहा तो रिश्तेदारों की बारी आई सब से प्रथम इमाम ने अपने जवान पुत्र हज़रत अली अकबर को जो हू-बहू रसूल से मिलते जुलते थे उनको मरने के लिए भेज दिया। हज़रत अली अकबर ने जिहाद किया और अपने प्राण अल्लाह के धर्म पर निछावर कर दिए। आपको रसूल के इस चित्र के मिट जाने का अत्याधिक शोक अवश्य हुआ परन्तु आपके साहस कर्तव्यपालन तथा प्रतिज्ञा एवं प्रण में किसी प्रकार की हीनता नहीं हुई। अक़ील के पुत्र अब्दुल्लाह इब्ने जाफ़र के पुत्र एक-एक करके सब ने विदा ली और मौत का प्याला पिया। इमाम हसन के पुत्र क़ासिम ने जब विदा ली और युद्ध की आज्ञा चाही तो इमाम हुसैन को बड़ा क्षोभ हुआ परन्तु अपने भाई इमाम हसन की वसीयत को दृष्टि में रखते हुए आपने उनको भी आज्ञा दे ही दी।

सबसे आख़िर में हज़रत अली के पुत्र हज़रत अब्बास युद्ध स्थल में गए। जब कोई न रह गया तो सेनापति स्वयं गया। हाशिम गौत्र का यह चाँद अब्बास जिसको इमाम हुसैन किसी प्रकार जिहाद करने की आज्ञा नहीं दे रहे थे क्योंकि उनके कांधों पर इस्लाम का ध्वज लहरा रहा था। परन्तु अन्त में एक जिहाद करने और साहस और उत्साह दूसरे छोटे-छोटे बच्चों की प्यास। अब्बास पानी लेने के लिए एक मश्क अपने साथ लेकर इमाम हुसैन की आज्ञा लेकर फ़ुरात नदी की ओर चले उन्होंने अलम (ध्वजा) की रक्षा भी की, दुश्मनों से लड़े भी फ़ौज को हटाकर नहर (फ़ुरात) तक पहुँचने के लिए रास्ता भी साफ़ किया और मश्क में पानी भी भर लिया परन्तु इसका शोक कि वह पानी हुसैन के पड़ाव तक न पहुँचने पाया था कि वीर ध्वजाधारी अब्बास के दोनों बाहु शत्रुदल के कठोर व्यक्ति ने तलवार से काट दिये। मश्क को भी एक तीर लगाकर छेद दिया। और पानी ज़मीन पर बह गया। अब्बास कीशक्ति का अन्त हो चुका था कि सर पर एक गुर्ज़ पड़ा जिसके कारण अब्बास पृथ्वी की ओर झुके और हुसैन की संक्षिप्त सेना की ध्वजा हज़रत अब्बास के साथ पृथ्वी पर आ रही। हुसैन की कमर टूट गई, पीठ झुक गई परन्तु साहस में किसी प्रकार की कमी उस समय भी न आई। अब जिहाद के मैदान में हुसैन के अतिरिक्त कोई भी नहीं दिखाई देता था। परन्तु शहीदों की सूची में एक अनुपम शहीद का नाम बाक़ी था जिसका अद्वितीय बलिदान इतिहास में न पहले देखा गया न बाद में देखे जाने की कोई आशा है। यह छः महीने का बच्चा अली असग़र था। जो झूले में प्यास के कारण मर रहा था। हुसैन ख़ेमे के द्वार पर आए और इस बच्चे को माँगा। बच्चे की प्यासमय दशा को देखा। निस्संदेह यह दृश्य मनुष्य के हृदय को हिला देने वाला था परन्तु कितने कठोर तथा कितने नीच थे सीरिया की सेना वाले कि उन्होंने इस बच्चे पर दया न की इसको पानी की एक बूँद भी न दी और पानी माँगने के उत्तर में बच्चे के कोमल कन्ठ पर हुरमुला दुष्ट ने एक ऐसा तीर मारा कि बच्चा बाप (हुसैन) के हाथों पर शहीद हो गया। इमाम हुसैन ने यह अन्तिम बलिदान भी अल्लाह के दरबार में प्रस्तुत कर दिया।

इसके बाद स्वयं रण-क्षेत्र में पधारे और इस अकेलेपन, मुसाफ़िरत तथा सब प्रकार के क्षोभों के सहन के पश्चात जब कि अवश्य तीन दिन के भूखे-प्यासे थे दिन भर मित्रों तथा रिश्तेदारों की लाशें उठाई थीं, सीने पर 72 आदमियों के मरने का दाग़ था। भाई के क्षोभ में कमर टूट चुकी थी, पुत्रों के मरने से कलेजे घाव हो चुके थे, परन्तु जब इस्लाम की रक्षा के हेतु तलवार निकाली तो संसार को हमज़ा, जाफ़र की शान तथा हज़रत अली की वीरता दिखा दी। आख़िर क़ुरबानी का समय आ गया, शरीर पर शत्रुओं के तीर, तलवार आदि शस्त्रों द्वारा इतने घाव हो चुके थे तथा ख़ून के बहने से शरीर में बिल्कुल शक्ति न रह गई थी। आप घोड़े पर संभलने के योग्य नहीं रहे। शत्रुओं ने कष्ट देने में कोई कोई कसर न छोड़ी। शिम्र नामक कठोर नीच तथा कायर ने पीड़ित हुसैन के गले को ख़ंजर से काट लिया हुसैन का सिर क्या कटा रसूल की गर्दन पर छुरी फेर दी गई। और नाम मात्र को इस्लाम का कलमा पढ़ने वालों ने पैग़म्बरे इस्लाम के नाती के सिर को नेज़े पर ऊँचा

उठाया, डेरों, ख़ेमों में आग लगा दी। रसूल के सम्मान पूर्ण घराने की पवित्र महिलाओं के सिर से उनकी चादरें उतार ली गईं। शहीदों के लाशे घोड़ों की टापों से रौंद डाले गए।

इमाम हुसैन के मरने के पश्चात मर्दो में केवल हुसैन के एक रोगी पुत्र जिनका नाम हज़रत सज्जाद था बाक़ी बचे थे। जिनको तौक़ और जंजीर पहनाकर बन्दी बनाया गया स्त्रियों तथा बच्चों को भी क़ैद किया गया और फिर इन सबको नगरों-नगरों फिराया गया करबला से कूफ़ा और कूफ़ा से सीरिया एक क़ैदी के रूप में यह रसूले ख़ुदा के घर वाले अपराधियों द्वारा ले जाए गए। इब्ने ज़ियाद तथा यज़ीद के दरबारों में खड़े किये गए इन सब बातों का संक्षिप्त वर्णन बाद वाली पुस्तिका में जिसमें हज़रत सैय्यदे सज्जाद की जीवन कथा है मिलेगा।

इन नाम मात्र मुसलमानों ने पैग़म्बरे ख़ुदा के नाती हुसैन को कफ़न भी न दिया आसपास बनी असद गोत्र के लोग बसे हुए थे उन्होंने शहादत के तीसरे दिन अर्थात 12 मुहर्रम को इन अपराधियों के चले जाने के पश्चात हुसैन को दफ़्न किया।

आज करबला में हुसैन का रौज़ा बड़े वैभव के साथ समस्त संसार की दृष्टि को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है और हुसैन के नाम का ताज़िया अलम और दूसरे प्रदर्शन आज भी संसार के हर स्थान पर मिलते हैं। हुसैन संसार में अमर हैं और उनके कारण इस्लाम बाक़ी है, सत्यता, तथार्थता, ईश्वर पूजा, स्वतंत्रता के लिए इमाम हुसैन की शहादत का उदाहरण मानवता के इतिहास में अनुपम रूप से सदा शेष रहेगा।

यदि करबला की घटना से संसार कुछ सीख ले और जो कार्य हुसैन ने करबला में किया उसका अनुकरण करने की चेष्टा करें तो जीवन के लक्षण पूरे राष्ट्र में प्रकट होने लगें।

हम में यही त्रुटि है कि हम महान उद्देश्यों के सामने अपने क्षणिक लाभ अपने आराम अपने जीवन अपनी रिश्तेदारियों तथा संतान एवं न जाने कितनी रूपहली, सुनहरी वस्तुओं का पक्ष करते हैं।

इमाम हुसैन ने यह उदाहरण उपस्थित किया कि तुम ऊँचे उद्देश्यों के लिए अपना सब कुछ बलिदान करने को तैयार रहो। धन्य है वह व्यक्ति जो हुसैन के बलिदान से पाठ लेकर अपने को प्रयोगात्मक ढंग से पेश करे जैसा हुसैन संसार को बनाना चाहते थे।

शेष... मानवता के शहीद

उस सर को यज़ीदी फ़ौज को देने से मना कर दिया तो फ़ौज के सिपाहियों ने उन युवा बालकों को क़त्ल कर डाला। फ़ौज के चले जाने के पश्चात बूढ़े ब्राहम्ण ने अपने बालकों के सर और धड़ जोड़कर इमाम की बारगाह में विनती की कि मेरे बच्चे आपके ही प्रेम में मारे डाले गए आप ही उन्हें दोबारा जीवन दीजिए। कहा जाता है कि बालक जीवित हो गए मगर उनकी गर्दनों पर निशान बने रहे और उस परिवार की पीढ़ी दर पीढ़ी पर यह निशान उनकी सन्तानों की गर्दन पर पाए जाते हैं इन्हीं लोगों को हुसैनी ब्राहमण कहा जाता है।

वास्तविक्ता यह है कि हिन्दुस्तान में इमाम हुसैन और उनके साथियों की यादगार जिस प्रकार मनाई जाती है दूसरे किसी देश में इस प्रकार से शायद ही मनाई जाती हो। इस तथ्य से यह बात स्वतः स्पष्ट हो जाती है कि हिन्दुस्तानियों को इमाम हुसैन[अ०] के प्रति विशेष श्रद्धा है। हर वर्ष मुहर्रम में हम सभी हिन्दुस्तानी बिना धर्म और जाति के भेदभाव के उस महान शहीद को श्रद्धांजलि आर्पित करते हुए अपने सर उसकी बारगाह में झुकाते हैं जिसने मानवीय मूल्यों को जीवित रखने के लिए अपना सर कटा दिया।

(इमामिया मिशन प्रकाशन न० 199 मार्च 1971)

इस्लाम और इंसानी हुक़ूक़

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी, जनरल सेक्रेट्री मजलिस उलमा-ए-हिन्द
अनुवादकः सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

(24)

अल्लाह की किताब क़ुरआन मजीद ने क़िसास और सख़्त सज़ाओं के सिलसिले में एलान फ़रमाया, "ताकि तुम पाकीज़ा बन जाओ" क्योंकि समाज लोगों से मिलकर बनता है और जब लोग पाक और पाकीज़ा होंगे तो समाज अपने आप पाक हो जायेगा। इस्लाम में सख़्त सज़ाओं का मक़सद समाजी तहज़ीब और सफ़ाई और इंसाफ़ और बराबरी का पैदा करना है। हमें यह देखना होगा कि इस्लाम का किरदार मुजरिमों के साथ दुश्मनों जैसा सख़्ती वाला और बेलचक है या मोहब्बत, मेहरबानी और नर्मी वाला है? जब हम शुरु की इस्लामी तारीख़ पर नज़र डालेंगे तो हमें इस बात के खुले सुबूत नज़र आयेंगे कि मुजरिमों के साथ वही तरीक़ा इख़्तियार किया गया है जो एक बाप अपनी नाफ़रमान औलाद के साथ इख़्तियार करता है। जब एक बाप अपनी नाफ़रमान और नालायक़ औलाद को सज़ा देता है तो न उसमें बदले की भावना होती है और न ज़ुल्म करने का इरादा बल्कि मक़सद सिर्फ़ सुधार होता है। जब वह यह देखता है कि डांट-फटकार और समझाने-बुझाने से काम नहीं चल रहा है तो वह मजबूरन सज़ा देता है और यह सज़ा भी रहम और मेहरबानी वाली ही होती है।

मुजरिमों के सिलसिले में कुछ ग़ैर इस्लामी मुफ़क्किरीन का सोचना है कि उनकी हैसियत एक ख़बसूरत बाग़ीचे में कांटेदार झाड़ियों से ज़्यादा नहीं कि बाग़ीचे की ख़ूबसूरती को बचाने के लिए जिनका उखाड़ फेंकना ज़रूरी है या ख़तरनाक किटाणु जैसी है कि सेहत की हिफ़ाज़त के लिए जिनका ख़त्म कर देना ज़रूरी है। कुछ लोगों का ख़याल है कि समाज में एक मुजरिम और ग़ैर मुजरिम में कोई फ़र्क़ नहीं है और सिर्फ़ माहौल की ख़राबी और सही परवरिश की कमी की वजह से मुजरिम जुर्म की तरफ़ बढ़ जाता है, इसलिए कमी समाज की है और मुजरिम को सज़ा देने के बजाए समाज का सियासी, कारोबारी और इज्तेमाई सुधार ज़रूरी है। कुछ की ज़िद है कि समाज के क़ानून तोड़ने वालों को हरगिज़ मुजरिम ही न कहा जाए, बल्कि वह नफ़्सियाती मरीज़ हैं और जिस तरह से मरीज़ के इलाज का इंतेज़ाम किया जाता है उसी तरह उनके नफ़्सियाती इलाज का इंतेज़ाम किया जाए, उनको सज़ा देना ऐसा ही है कि जैसे किसी बीमार को उसकी बीमारी पर सज़ा दी जाए। कुछ का यह अजीब ग़रीब सोचना है कि हर मुजरिम माँ के पेट से मुजरिम पैदा होता है। वह दुनिया में आकर मुजरिम नहीं बनता, बल्कि मुजरिम बनकर पैदा होता है। जुर्म की तरफ़ झुकाव उनके बदन में ख़ून बनकर दौड़ रहा होता है, इसलिए हर मुजरिम सुधारा नहीं जा सकता और दुनिया से जुर्म और गुनाह मिटाने का एक ही तरीक़ा है कि ऐसे लोगों की नस्ल ही काट दी जाए, (न रहे बाँस न बजेगी बाँसुरी) लेकिन इस्लामी उलमा ने क़ुरआन मजीद और हदीसों की रौशनी में जो ख़याल पेश किया है उसका ख़ुलासा कुछ इस तरह से है:

मुस्बत और मनफ़ी, नेकी और बदी, अच्छाई

और बुराई इन्सान की फ़ितरत में दाख़िल है। सूरए रहमान में एलान हुआ है, "हम ने तुम्हारे नफ़्स में अच्छाई और बुराई को डाल दिया है" लेकिन इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं हैं कि मुजरिम, मुजरिम बनकर दुनिया में आता है और नेक, नेक बनकर। और न यह मतलब है कि इंसान आधा अच्छा होता है और आधा बुरा। बल्कि मतलब यह है कि हर इंसान में पैदाइशी तौर पर भलाई की ताक़त भी मौजूद है और बुराई की भी। इन्सान की तबीअत और फ़ितरत में अलग-अलग तरह की ख़ूबियाँ मौजूद हैं। अब इंसान की कौन सी ताक़त फलती-फूलती है और भलाई और बढ़ोत्तरी हासिल करती है यह इस बात पर टिका है कि उसे कैसी परवरिश मिलती है? उसका समाज कैसा है? माहोल कैसा है? और अपनी बनावट और अंदाज़ में बराबर है। ऐसा नहीं है कि कुछ इंसान नेक और अच्छे पैदा होते हैं और कुछ बुरे। बल्कि हर इंसान में नेकी और बदी दोनों की ख़ूबियाँ मौजूद रहती हैं, लेकिन फ़ितरत में बुराई के किटाणु छुपे होने का मतलब यह नहीं है कि जुर्म करने वाला बेक़सूर है और वह सज़ा से बच जाए, क्योंकि अल्लाह तआला ने उसे अक़्ल और तमीज़ की ताक़त, सोच-समझ, इरादा और इख़्तियार भी दिया है, इसलिए वह अपने किरदार और रफ़्तार का खुद ही ज़िम्मेदार है। लेकिन इस्लाम ने बुरे कामों से इंसान को बचाने के लिए अख़लाक़ी तालीम और नफ़्स की तहज़ीब को ज़रूरी क़रार दिया है और नबियों के भेजने का मक़सद ही अख़लाक़ की तालीम और नफ़्स की तहज़ीब को क़रार दिया है।

अगरचे इंसान अपने गुनाहों और जुर्मों का खुद ज़िम्मेदार है, लेकिन इसके बावजूद इस्लाम एक मुजरिम से नफ़रत नहीं सिखाता, बल्कि उसके लिए रहम और मेरहबानी के जज़्बे को उभारता है। हज़रत अली[अ०] का इरशाद है, "गुनाहगार और मुजरिम रहमत और मेहरबानी के हक़दार हैं" (नहजुल बलाग़ा खुतबा-7) मिस्र के गवर्नर मालिक अश्तर को ख़त में लिखा, "अपने दिल को लोगों की मोहब्बत और रहम की जगह बनाओ और उनके साथ वैसी माफ़ी और मेहरबानी करो जैसा तुम अपने लिए अल्लाह से चाहते हो" (नहजुल बलाग़ा नामा, 53) अपने मुख़ालिफ़ीन के लिए आप ने फ़रमाया, "मैं तुम्हारा इलाज करना चाहता हूँ" (नहजुल बलाग़ा, खुतबा-120) इसी तरह से हज़रत अली[अ०] रसूलुल्लाह[स०] को तबीब और हकीम के नाम से याद फ़रमाते हैं, "रसूलुल्लाह[स०] एक चलते-फ़िरते तबीब हैं, ऐसा तबीब जो खुद बीमारों तक पहुँचता है। यह कभी मरहम के ज़रिए और कभी दाग़ करके इलाज करते हैं।" (नहजुल बलाग़ा, खुतबा-107) हज़रत अली[अ०] का बड़ा बलीग़ जुमला है। यानी कभी माफ़ी का मरहम रख देते हैं और अगर मरीज़ को ज़रूरत है तो दाग़ करके इलाज करते हैं इसी का दूसरा नाम इस्लामी सज़ा है।

इस्लाम में जुर्म और गुनाह दो तरह के हैं। कुछ का ताल्लुक़ अल्लाह के हुक़ूक़ से है और कुछ का ताल्लुक़ लोगों के हुक़ूक़ से है। वह गुनाह जिसका ताल्लुक़ अल्लाह के हक़ से हो, उसके साबित होने के दो तरीक़े हैं (1) गवाहों से साबित हो (2) गुनाह करने वाला खुद इक़रार करे। मैंने पिछले मज़मून में कहा था कि ज़िनाकारी वह गुनाह है जिसके लिए कम से कम चार गवाहों की ज़रूरत है और गवाही के लिए इस्लामी शरीअत ने ऐसी सख़्त शर्तें रख दी हैं कि शुरु इस्लाम में गवाहों से यह इज़्ज़त और पाकदामनी के ख़िलाफ़ काम साबित ही न हो सका, इसलिए किसी को सज़ा न मिली। मगर गुनाह के खुद इक़रार के बहुत से वाक़िआत तारीख़ में मिल जाते हैं, लेकिन हर मामले में शरई हाकिम की पूरी कोशिश यही रही कि गुनाहगार सज़ा से बच जाए और मजबूरी की हालत में सज़ा दी जाए।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू), 24 फ़रवरी 2012[ई०])

(जारी)

मानवता के शहीद

जनाब मिर्ज़ा आबिद हुसैन साहब मरहूम
अनुवादकः जनाब अमानत अली साहब

प्रत्येक वर्ष मुहर्रम की दस तारीख़ को जब मुहर्रम के किसी जुलूस पर दृष्टि पड़ती है तो भावुक हृदय यह जानने के लिए उत्सुक हो जाता है कि वह कौन सी मार्मिक घटना घटित हुई जिसे शताब्दियों की धूल की पर्तें अपने भीतर न छुपा सकीं।

अब से चौदह सौ साल पहले अरब की भूमि पर ईश्वर के अंतिम दूत हज़रत मुहम्मद साहब ने फारान की चोटी से पथ भ्रष्ट लोगों को आवाज़ दी ''और उन्हें सत्य के मार्ग पर चलने के लिए आमंत्रित किया''। यह वह समय था जब अरब वासी 'व्यक्तित्व-उपासना' में लीन थे। उनके ईश्वर सैकड़ों देवी देवताओं का रूप धारण कर चुके थे। काबे में रखी हुई तीन सौ साठ मूर्तियाँ अरब वासियों के विचारों को प्रतिबन्धित कर रही थीं। ऐसे समय में मुहम्मद साहब ने उन्हें सैकड़ों देवताओं के बजाए एक ईश्वर (अल्लाह) के सामने सर झुकाने पर बल दिया, वह ईश्वर जिसने सारे ब्रहमाण्ड की रचना की। मुहम्मद साहब के बताए हुए इस तथ्य (सत्य) का अनुकरण करना अरब-वासियों के विरूद्ध तथा अपमानजनक था। यदि मुहम्मद साहब ने उनके पूजनीय देवी देवताओं की संख्या में एक की वृद्धि कर दी होती तो सम्भवतः अरब वासी उसे अधिक प्रसन्नता से स्वीकार कर लेते, अपने प्रचलित खुदाओं की निंदा किया जाना उन्हें अच्छा न लगा।

मुहम्मद साहब को अरब वासियों के दृष्टिकोण को परिवर्तित करने के लिए कठिन परिस्थितियों से गुज़रना पड़ा। उसके पश्चात जनसाधारण ने मुहम्मद साहब का संदेश स्वीकार किया। अरब भूमि पर इस्लाम के मानने वालों की संख्या बढ़ने लगी और धीरे-धीरे उनके सरदारों ने भी इस्लाम का संदेश स्वीकार किया, परन्तु उनमें से कुछ व्यक्ति जिन्होंने समय और परिस्थितियों से विवश होकर इस्लाम धर्म स्वीकार किया था, उनके हृदय में इस्लाम के प्रति कोई श्रद्धा भाव न होने के कारण वे इस्लाम के सच्चे अनुयायी न बन सके।

मुहम्मद साहब की मृत्यु के पश्चात् परिस्थितियाँ उनके परिवार के प्रतिकूल हो गयीं अतः उनके दामाद हज़रत अली[अ०] को रमज़ान के पवित्र महीने में रोज़े (व्रत) की दशा में विष से बुझी तलवार से शहीद कर दिया गया, इसके पश्चात् मुहम्मद साहब के बड़े नवासे इमाम हसन[अ०] को धोके से विष देकर शहीद किया गया और उन्हें मुहम्मद साहब की क़ब्र के पास दफ़न भी नहीं करने दिया गया बल्कि उनके शव पर बाड़ों से प्रहार किया गया। यह घटना इस्लाम के मौलिक सिद्धान्तों पर खुला हुआ विद्रोहात्मक प्रहार थी। इस विद्रोह का अन्त करबला में हुआ जब मुहम्मद साहब के छोटे नवासे इमाम हुसैन[अ०] और उनके बहत्तर साथियों को तीन दिन का भूखा प्यासा क़त्ल कर दिया गया।

इमामे हुसैन[अ०] का इस प्रकार निर्दयतामय क़त्ल क्रूरता और मज़लूमियत (अत्याचारितता) की एक ऐसी अद्वितीय घटना थी जिसका उदाहरण विश्व के किसी इतिहास में न मिल सकेगा।

यद्यपि अपने समय की सबसे बड़ी हुकूमत ने एक छोटी सी बहत्तर आदमियों की भूखी प्यासी सेना को

जिसमें अस्सी वर्ष के बूढ़े से लेकर छः माह का बच्चा भी था, अपनी असीम शक्ति का क्रूरता पूर्वक प्रयोग करके क़त्ल तो कर दिया पर उनकी राजनीतिक चालें तथा अत्याचार का सागर उस सेना के एक छोटे से बालक को भी असत्य के सामने झुका न सका। निश्चय ही करबला की लड़ाई मानवता पर एहसान करने वाले मुहम्मद साहब के नवासे इमामे हुसैन[अ०] की अमर कथा से सम्बद्ध है। उस समय हुकूमत एक ऐसे व्यक्ति के हाथों में पहुँच चुकी थी जिसने इस्लाम के सिद्धान्तों की सीमाओं को तोड़कर उन विचारों को पुनर्जीवित कर दिया था जो मुहम्मद साहब के संदेश सुनाने के पूर्व अरब वासियों के हृदय में व्याप्त थे। व्यक्तित्व उपासना फिर उभर कर सामने आ रही थी जिसको मुहम्मद साहब ने मिटाने का प्रयत्न किया था और ऐसा प्रतिष्ठित जीवन सिद्धान्त दिया था जिसने ऊँच-नीच की श्रेणियों को समाप्त कर दिया था। आत्मा पर नियंत्रण रखना जीवन की कसौटी थी, सरल जीवन बिताना भाईचारे की भावना इस्लाम के मौलिक सिद्धान्त थे परन्तु यज़ीद तक हुकूमत पहुँचते-पहुँचते इस्लामी सिद्धान्त की आत्मा निर्जीव सी हो चुकी थी उसके मूल्य धुंधले पड़ चुके थे और पदासीन व्यक्तियों ने एक बार 'क़ैसर' (रूम के सम्राट की उपाधि), 'किस्रा' (ईरान के सम्राट की उपाधि) के स्रोतों को सर उठाने का अवसर दिया था और एक ही ईश्वर का बनाया हुआ मनुष्य ऊँच-नीच की श्रेणियों में विभक्त हो गया था, इस्लामी सिद्धान्तों और नियमों का अनादर हो रहा था और मुसलमानों में इतनी हिम्मत नहीं रह गई थी कि तत्कालीन शासक के ग़ैर इस्लामी कार्यों के विरूद्ध कोई आवाज़ उठा सकते। यद्यपि मुसलमानों की एक बड़ी संख्या ने भय या लालच में आकर यज़ीद को ख़लीफ़ा स्वीकार कर लिया था लेकिन यज़ीद यह जानता था कि जब तक हुसैन और उनके परिवार के लोग उसको मान्यता प्रदान न करेंगे वह इस्लामी शासन का उत्तराधिकारी नहीं बन सकता। इस कारण इमामे हुसैन[अ०] पर यह दबाव डाला गया कि वह यज़ीद को विधिपूर्ण शासक स्वीकार करें। इमाम हुसैन[अ०] के लिए यह सम्भव न था कि वह ऐसे व्यक्ति को जो इस्लाम के मौलिक सिद्धान्तों का हनन कर रहा था उसे इस्लाम का संरक्षक मान लेते। इमाम हुसैन के लिए यह कार्य अत्यन्त सरल था कि वह यज़ीद के विरूद्ध जनमत को भड़काते और गद्दी पर अधिकार जमा लेते, ऐसा करना उस समय की प्रचलित प्रथाओं के विरूद्ध भी न होता परन्तु इमामे हुसैन[अ०] तिरस्कृत होते हुए इस्लाम को बचाने के लिए प्रचलित हिंसात्मक तरीक़ों को न अपना कर अहिंसा और बलिदान के रास्ते को अपनाना चाहते थे।

कुछ लोग अवश्य ही इमाम हुसैन[अ०] की शहादत को एक साधारण सी घटना समझते होंगे परन्तु तथ्य यह है कि यह कोई साधारण घटना न थी यदि यह एक आकस्मिक घटना होती तो यह शहादत मदीने के तत्कालीन शासक वलीद के दरबार में ही हो गई होती जबकि इमाम हुसैन[अ०] को अकेले ही वलीद ने अपने दरबार में बुलाया था या फिर मक्के में हज के अवसर पर यज़ीद द्वारा भेजे गए गुप्तचरों द्वारा इमाम हुसैन[अ०] को क़त्ल कर दिया गया होता परन्तु इमाम हुसैन[अ०] ने अपनी दूरदर्शिता और बुद्धिमता से ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर दी गयीं थी कि यज़ीद अपने कुकर्मों पर पर्दा न डाल सके।

करबला की लड़ाई दो शासकों की पारस्परिक लड़ाई भी नहीं कही जा सकती जैसा कुछ इस्लाम से अनभिज्ञ लोगों का विचार है। इमाम हुसैन[अ०] के अधीन न तो कोई राज्य था और न ही उन्होंने किसी सैन्य शक्ति जुटाने का कभी प्रयास किया था, बल्कि जो लोग स्वंय ही आपके साथ इस लड़ाई में जाने के लिए तैयार हुए उन्हें भी आप ने यह कहकर विदा कर दिया कि मैं तो मरने के लिए जा रहा हूँ यहाँ तक कि शहादत की रात को जो उनके जीवन की आख़िरी रात थी, इमाम हुसैन[अ०] ने अपने साथियों को इकट्ठा करके कहा कि "तुम सब मुझको छोड़कर चले जाओ" और यह कहकर चराग़ बुझा दिया ताकि जाने वालों को लज्जा न आए। इस प्रकार वह अपने साथियों की संख्या बढ़ाने के बजाए कम करते रहे यहाँ तक कि केवल बहत्तर व्यक्ति ही साथ रह गए जो दस मुहर्रम को उनके साथ शहीद हुए।

सन् इक्सठ हिजरी में इमामे हुसैन[अ०] अपने साथियों सहित शहीद हो गए। अरब की तपती भूमि पर तीन दिन तक उनको पानी की एक बूँद भी पीने को न दी गई। उनके बच्चों को नैज़ों के वाणों से छलनी किया गया, और क्रूरता से क़त्ल किया गया, उनके ख़ैमों में आग लगा दी गई, औरतों के सरों पर से चादरें उतारी गईं, मुहम्मद साहब[स०] की नवासियों और उनके परिवार के सदस्यों को बन्दी बनाकर अपमान हेतु शाम और कूफ़े के बाज़ारों में फिराया गया। चाहे उस समय लोग चमकती तलवारों के बीच इस अत्याचार पर गहरी नज़र न डाल सके परन्तु शीघ्र ही उन्होंने यह अनुभव किया कि ऐसे मनुष्यों को जो मुहम्मद साहब[स०] के नवासे पर पानी बंद कर दें, नन्हें-नन्हें बच्चों को क़त्ल कर दें, औरतों को बेपर्दा कर दें और उन्हें अपमानित करें क्या उसे एक मुसलमान या एक सभ्य मानव कहा जा सकता है?

यज़ीद की औपचारिक सफ़लता उसकी वास्तविक असफलता थी जिसकी पहली घोषणा यज़ीद द्वारा उस समय की गई जब इमाम हुसैन[अ०] के परिवार के सदस्यों को बंदी बनाया गया और शाम और कूफ़ा के वासियों को जब इस बात का पता चला कि हम को धोके में रखकर यज़ीद ने मुहम्मद के नवासे को क़त्ल करवा दिया जो मुहम्मद साहब[स०] के वास्तविक उत्तराधिकारी थे, तो उन्होंने यज़ीद को इस कुकर्म के लिए के लिए धिक्कारा। यज़ीद ने स्वयं आत्म ग्लानि की और हुसैन के बड़े बेटे इमामे ज़ैनुलआबिदीन[अ०] को बुलाकर कहा कि आपको मैं क़ैद से रिहा करता हूँ और आपका जहाँ जी चाहे वहाँ चले जाएं। यज़ीद का अपने अत्याचार को महसूस करना ही इमाम हुसैन[अ०] की जीत का प्रारम्भ था।

यज़ीद का पुत्र 'मुआविया' अपने पिता के अत्याचार और बर्बरता से इतना अधिक विरूद्ध हो गया कि उसने अपने पिता के बाद राजगद्दी को ठोकर मार दी और कहा कि मैं उस राज्य का शासन अपने हाथों में नहीं लेना चाहता जिसकी नीव हिंसा और अत्याचार पर रखी गयी हो। यदि इमाम हुसैन अपना बलिदान न करते तो यज़ीद की मृत्यु के बाद भी यज़ीदियत (अत्याचार) समाप्त न होती और एक के बाद एक नया यज़ीद पैदा होता रहता। इमाम हुसैन[अ०] ने अपने इस अमूल्य बलिदान के लिए एक अनोखा मार्ग अपनाया कि स्वयं शाहीद हो गए, अपनी गोद के पाले बच्चे को अपने सामने क़त्ल होते देखा, अपने सगे सम्बन्धियों और साथियों का बलिदान दिया, स्त्रियों की रुसवाई स्वीकार की परन्तु इस्लाम को मिटने से बचा लिया और मानवीय मूल्यों की रक्षा इस प्रकार से की कि अब कोई यज़ीद उसको ध्वस्त नहीं कर सकता।

मुहर्रम में निकलने वाले मातमी जुलूसों और मजलिसें इस सत्यता को दर्शाती हैं कि हम उस शहीद को अपनी श्रद्धांजली अर्पित कर रहे हैं जिसने सत्य के लिए बलिदान दिया, मानवता की रक्षा की और इस्लाम की नींव को सुदृढ़ बनाया। हिन्दुस्तान में इमाम हुसैन[अ०] की अमर बलिदान की यादगार हर वर्ष विशेष रूप से मनायी जाती है क्योकि इमाम हुसैन[अ०] को हिन्दुस्तान से विशेष लगाव था। एक कथा यह भी है कि करबला के मैदान में जब हुसैन और यज़ीद के बीच संधि की बात हो रही थी तो इमाम हुसैन[अ०] ने कहा था कि यदि तुम लोगों को मेरे अरब में रहने से कोई भय हो तो तुम मुझे हिन्दुस्तान चला जाने दो। इमाम हुसैन[अ०] के इन विचारों का आदर करते हुए हिन्दुस्तान के अधिक्तर व्यक्ति बिना जाति और धर्म के भेदभाव के उनकी यादगार हर वर्ष मनाते हैं यहाँ तक कि ब्राह्मणों में तो एक ऐसा वर्ग है जो हुसैनी ब्राह्मण कहलाता है। कहा जाता है कि सिकंदर पंजाब को जीतने के बाद हिन्दुस्तान से एक ब्राह्मण परिवार अपने साथ ले गया था जो ज्योतिष विद्या में दक्षता रखता था, यह परिवार इराक़ में बस गया था। इमामे हुसैन[अ०] के क़त्ल हो जाने के बाद यज़ीदी फ़ौज इसी मार्ग से गुज़री जहाँ ब्राह्मण परिवार ने अपना पूजा-स्थल बनाया था। रात में उस ब्राह्मण ने एक कटे हुए सर से प्रकाश निकलते हुए देखा तो चकित हुआ। यह सर उसी पूजा स्थान में रखा हुआ था। जब उस ब्राहम्ण ने उस सर के बारे में पता लगाया तो मालूम हुआ कि यह कटा हुआ सर मुहम्मद साहब[स०] के नवासे इमामे हुसैन[अ०] का है। ब्राह्मण परिवार के युवा बालकों ने

शेष... पेज 9 पर

मुख्य समाचार

मरकज़ इस्राईल और अमरीका के इशारे पर चलना बंद करे

मुस्लिम मसाएल पर शिया-सुन्नी उलमा की कांग्रेस पर नुक्ताचीनी

शिया-सुन्नी उलमा ने हज़रतगंज में वाक़े इमामबाड़ा सिब्तैनाबाद में मुन्अक़िद प्रेस कांफ्रेंस में मुसलमानों से वाबस्ता मुख़्तलिफ़ मसाएल पर मरकज़ी हुकूमत पर सख़्त तनक़ीद करते हुए कहा कि गुज़श्ता बरसों से बेक़ुसूर मुस्लिम नौजवानों को मुबैय्यना तौर पर दहशतगर्दाना सरगर्मियों में गिरफ़्तार करके जेलों में रखा जा रहा है। मालेगाँव, मक्का मस्जिद और देहली बम ब्लास्ट इसकी ज़िंदा मिसालें हैं। क़ाएदे मिल्लत की क़यादत में उलमा ने 23 मार्च को लखनऊ में एहतेजाजी रैली निकालने और 26 मार्च को देहली में पार्लियामेंट हाउस पर मुज़ाहेरा करने का इन्तेबाह दिया है। प्रेस कांफ्रेंस में क़ाएदे मिल्लत मौलना सैय्यद कल्बे जवाद नक़वी ने कहा कि उर्दू के सीनियर सहाफ़ी सैय्यद मोहम्मद अहमद काज़मी की गिरफ़्तारी से यह वाज़ेह हो गया है कि मुसलमानों के सिलसिले में मरकज़ी हुकूमत की नियत ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि मुसलमानों के मज़हबी जज़्बात को ठेस पहुँचाने के लिए मुतानाज़ेआ मुसन्निफ़ सलमान रुश्दी और तस्लीमा नसरीन को वीज़ा दिया जाता है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी इस्राईल और अमरीका के दबाव में काम करती है। अगर अमरीका ने ईरान पर हमला किया तो हिन्दुस्तान में पेट्रोल की क़ीमत 150 रुपये लीटर तक पहुँच सकती है। प्रेस कांफ्रेंस में जमाअते इस्लामी हिन्द के मोहम्मद ख़ालिद, मुस्लिम समाज के जनरल सेक्रेट्री एम० ए० हसीब, मस्जिद आयशा के इमाम मौलाना फ़ज़्लुररहमान नदवी, जमीअतुल कुरैश के सेक्रेट्री सुलतान कुरैशी मजलिस उलमा हिन्द के रुक्न मौलाना फ़ीरोज़ हैदर और मौलाना मोहम्मद हैदर व मौलाना रज़ा हुसैन समेत कसीर तदाद में शिया-सुन्नी उलमा और अहम शख़्सियात ने भी मरकज़ी हुकूमत की मुस्लिम मुख़ालिफ़ पॉलीसियों की मज़म्मत की।

सहाफ़ी सै0 मोहम्मद अहमद काज़मी की गिरफ़्तारी के ख़िलाफ़ ज़बरदस्त मुज़ाहेरा

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद ने कांग्रेस की मरकज़ी हुकूमत को आगाह किया

दहशतगर्दी के इल्ज़ाम में देहली में गिरफ़्तार किए गए सीनियर सहाफ़ी मोहम्मद अहमद काज़मी को रिहा करने की माँग को लेकर शिया-सुन्नी फ़िरक़े के हज़ारों लोग क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी साहब और टीले वाली मस्जिद के शाही इमाम मौलाना शाह फ़ज़्लुररहमान वाएज़ी नदवी की क़यादत में लखनऊ की सड़कों पर उतरे।

सहाफ़ी मोहम्मद अहमद काज़मी की हिमायत में मजलिसे उलमा-ए-हिन्द के ज़ेरे एहतेमाम 23 मार्च 2012ई० को जुमे की नमाज़ के बाद एहतेजाजी जुलूस बड़े इमामबाड़े से निकाला गया। जुलूस टीले वाली मस्जिद, डालीगंज होता हुआ तक़रीबन दोपहर दो बजे शहीद स्मारक पहुँचा। जुलूस में शामिल लोग अमरीका इस्राईल मुर्दाबाद, सोनिया राहुल मुर्दाबाद, मरकज़ी हुकूमत व देहली पुलिस मुर्दाबाद के नारे लगा रहे थे और सहाफ़ी मोहम्मद अहमद काज़मी की रिहाई की माँग कर रहे थे। मुज़ाहेरीन अमरीकी झण्डे से सड़क साफ़ करते हुए जुलूस के आगे चल रहे थे। शहीद स्मारक पहुँचा जुलूस जल्से में तबदील हो गया। शहीद स्मारक पर मजमे को ख़िताब करते हुए क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद ने कहा कि अल्लाह को ज़ुल्म पसंद नहीं है। उन्होंने कहा कि हुकूमत ने सैकड़ों बेगुनाह मुसलमान नौजवानों को जेल में ठूंसा है। उन्होंने हुकूमत को आगाह करते हुए कहा कि जब तक हुकूमत हिन्दुस्तान से इस्राईली सिफ़ारतख़ाने को बंद कर हिन्दुस्तान की जेलों में बंद बेगुनाह मुसलमान नौजवानों को रिहा नहीं करेगी तब तक उनका यह मुज़ाहेरा जारी रहेगा। उन्होंने 26 मार्च को पार्लियामेंट के घेराव का एलान भी किया। मौलाना ने कहा पुलिस ज़बरदस्ती झूठ को सच साबित करने की कोशिश कर रही है। लेकिन अदालत पुलिस के सामने दिए गए बयान को अहमियत नहीं देती है उन्होंने कहा कि दहशतगर्द हमलों के पीछे अमरीका, इस्राईल व सियासी लीडरों का हाथ होता है। उन्होंने हुकूमत से माँग की है कि हुकूमत उन पुलिस अहलकारों को जेल भेजे जिन्होंने बेगुनाह मुसलमानों को कई बरसों तक जेल में ठूंसा। उन्होंने कहा कि बेगुनाही साबित होने के बाद जेलों से रिहा हुए मुसलमानों को हुकूमत एक करोड़ रुपये साल के हिसाब से मुआवज़ा भी दे। उन्होंने मरकज़ी वज़ीर पी० चिदम्बरम को अमरीका और इस्राईल का एजेंट कहा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी की अगर इसी तरह की कारगुज़ारियाँ रहीं तो कांग्रेस का पूरे मुल्क से सफ़ाया होगा। 2014 के इलेक्शन में कांग्रेस को यू०पी० से एक सीट जीतना भी मुश्किल हो जाएगा। उन्होंने शिया-सुन्नी मुसलमानों में आपस में इत्तेहाद क़ायम करने की अपील की है।

इराक़ में अलक़ायदा के हमले में कर्नल व कप्तान समेत 27 अहलकार हलाक

इराक़ में फ़ौजी वर्दियों में मुसल्लह अफ़राद ने पुलिस चौकियों पर एक के बाद एक हमलें करके कर्नल और एक कप्तान समेत कम से कम 27 अहलकारों को हलाक कर दिया जबकि कम से कम एक हमला आवर भी हलाक हो गया है।

हमला आवरों ने एक चेकपोस्ट पर अलक़ायदा का परचम लहरा दिया। दूसरी तरफ़ शहर में कर्फ़्यु नाफ़िज़ कर दिया गया है। ज़राए इबलाग़ की रिपोर्ट्स के मुताबिक़ इराक़ी सेक्योरिटी हुक्काम ने बताया कि दर्जनों मुसल्लह अफ़राद की जानिब से यह हमले राजधानी बग़दाद से 220 किलोमीटर शिमाल मग़रिब में हदीसा शहर में पीर को सुबह-सुबह किए गए। इत्तेलाआत के मुताबिक़ फ़ायरिंग के तबादले में एक हमला आवर भी मारा गया। हदीसा पुलिस के तर्जुमान मेजर तारिक़ सैय्यद हरदान के मुताबिक़ हमला आवर सेक्योरिटी फ़ोर्सेज़ के युनिफ़ार्म में मलबूस थे और उनके पास गिरफ़्तारी के जाली वारण्ट थे।

पुलिस तर्जुमान के मुताबिक़ कई चेक पोस्टों पर हमले के नतीजे में एक कर्नल और एक कप्तान समेत 27 पुलिस अहलकार हलाक और 3 ज़ख़्मी हुए। उनका कहना था कि अलक़ायदा इन हमलों की ज़िम्मेदार है और अलक़ायदा का लिट्रेचर हमला आवरों की एक गाड़ी से मिला है।

एक मक़ामी लेफ़्टीनेन्ट के मुताबिक़ हमला आवर के पास वज़ारते दाख़िला के ज़ेरे इस्तेमाल गाड़ियों जैसी 13 गाड़ियाँ थीं और उनमें सवार मुसल्लह अफ़राद शहर में क़ाफ़ले की सूरत में घूमते हुए पुलिस की मुख़्तलिफ़ चेक पोस्टों पर फ़ायरिंग कर रहे थे। इन पुलिस अफ़सरान की लाशें बाद में मिल गईं।

अमरीका ख़बर रसाँ इदारे के मुताबिक़ जिन चेक पोस्टों पर हमले किये गये हैं उनमें से एक पर अलक़ायदा का परचम लहराया गया। उधर इराक़ी ओहदेदारों का कहना है कि मोहलिक हमलों के बाद शहर में कर्फ़्यु नाफ़िज़ कर दिया गया। पुलिस के एक तर्जुमान ने फ्रांसीसी ख़बर रसाँ इदारे से बात करते हुए हमलों की ज़िम्मेदारी अलक़ायदा पर आएद की है। 2003ई० में सद्दाम की हुकूमत के ख़ात्मे के बाद हदीसा अलक़ायदा का एक मज़बूत गढ़ बन गया है।

इमाम ख़ुमैनी[रह०] ने क़ुद्स को मज़बूत और पायदार बना दिया: सैय्यद हसन नस्रुल्लाह

हिज़्बुल्लाह लेबनान के सरबराह सै० हसन नस्रुल्लाह ने अपने एक ख़िताब में बैतुलमुक़द्दस के बारे में रहबरे कबीर इंक़ेलाबे इस्लामी हज़रत इमाम ख़ुमैनी के नक़्श की तारीफ़ व तमजीद करते हुए बैनुलअक़वामी हालात को फ़िलिस्तीन और बैतुलमुक़द्दस की आज़ादी के हक़ में क़रार दिया है।

उन्होंने कहा कि बैतुलमुक़द्दस शहर एक मुबारक और बेमिसाल शहर है जो तमाम अद्याने इलाही के मानने वालों की तवज्जो का मरकज़ है। सैय्यद हसन नस्रुल्लाह ने बैरूत में बैतुलमुक़द्दस, फिलिस्तीन, अरबों और मुसलमानों के दारुलहुकूमत के उनवान से मुनअक़िद होने वाले सेमिनार से ख़िताब करते हुए कहा कि बैतुलमुक़द्दस को यहूदी दारुलहुकूमत बनाने के सिलसिले में बहुत कोशिशें की गई हैं। उन्होंने कहा कि बैतुलमुक़द्दस का इलाक़े के हालात के साथ गहरा ताल्लुक़ है और इलाक़े के हालात का असली मेहवर बैतुलमुक़द्दस ही है।

सैय्यद हसन नस्रुल्लाह ने फिलिस्तीनियों, मुसलमानों, अरबों और ईसाईयों पर ज़ोर दिया कि वह बैतुलमुक़द्दस की तारीख़, सक़ाफ़त और तशख़्ख़ुस के बारे में अपनी अख़लाक़ी, क़ौमी और मज़हबी ज़िम्मेदारियों को पूरा करें। उन्होंने कहा कि जिस तरह हर इंसान अल्लाह तआला के सामने मसऊल और ज़िम्मेदार है इसी तरह बैतुलमुक़द्दस के बारे में भी मसऊल और ज़िम्मेदार है। बैतुलमुक़द्दस पर ग़ासिबाना क़ब्ज़े के बारे में सबसे सवाल किया जायेगा और हम बैतुलमुक़द्दस की आज़ादी के सिलसिले में ज़िम्मेदार हैं।

उन्होंने कहा कि इस्राईल बैतुलमुक़द्दस को अपना दारुलहुकूमत बनाने पर इस्रार कर रहा है इसलिए उसके साथ गुफ़्तगू बेसूद और बेफ़ायदा है जबकि अमरीका, इस्राईल का पुश्तपनाह और उसके वहशियाना और ख़ौफ़नाक जराएम में मुलव्विस है। उन्होंने कहा कि फ़िलिस्तीन, लेबनान, इराक़ और मिस्र में मुक़ावमत की कामयाबी, इराक़ से अमरीक फ़ौजियों का इन्ख़ेला और मिस्र में हुस्नी मुबारक के निज़ाम के ज़वाल से बैतुलमुक़द्दस और फिलिस्तीन की आज़ादी के आसार नुमायाँ हो गए हैं।

उन्होंने कहा कि हुस्नी मुबारक इस्राईल का बहुत बड़ा और अहम हामी था जिसे अल्लाह तआला ने ज़लील और रुसवा कर दिया और अमरीका व इस्राईल के दूसरे हामी भी ज़लील व रुसवा होंगे और बैतुलमुक़द्दस आज़ाद हो जायेगा।